

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे
संस्कृत पारंगत (एम.ए.) बहिःस्थ
परीक्षा: डिसेंबर - २०२३
सत्र २ रे
विषय: किरातार्जुनीय (22E322)

दिनांक: ०७/१२/२०२३

गुण : १००

बोल : दु. २.०० ते ५.००

सूचना: १) उजवीकडील अंक त्या प्रश्नांचे गुण दर्शवितात. २) सर्व प्रश्न सोडवणे अनिवार्य.

प्र. १. श्लोकचतुष्टयस्य सानुवादं स्पष्टीकरणं कुरुत । (२०)

१. असक्तमाराध्यतो यथायथं विभज्य भक्त्या समपक्षपातया।
गुणानुरागादिव सख्यमीयिवान् न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्॥
२. न समयपरिक्षणं क्षमं ते निकृतिपरेषु परेषु भूरिधामः।
अरिषु हि विजयार्थिनः क्षितिशा विद्धति सोपाधि सन्धिदूषणानि॥
३. इमामहं वेद न तावकीं धियं विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयाः।
विचिन्त्ययन्त्या भवदापदं परां रुजन्ति चेतः प्रसभं ममाधयः॥
४. स्फुटता न पदैरपाकृता न च स्वीकृतमर्थगौरवम्।
रचिता पृथगर्थता गिरां न च सामर्थ्यमपोहितं क्वचित्॥
५. विषमेऽपि विगहयते नयः कृतीर्थः पयसामिवाशायः।
स तु तत्र विशेषदुर्लभः सदुपन्यस्यति कृत्यवर्त्म यः॥

प्र. २. टिप्पणीचतुष्टयं लिखत। (२०)

- | | | |
|-------------------|---------------|---------------------|
| १. वृकोदरः | २. वनेचरः | ३. भारवेःअर्थगौरवम् |
| ४. चतस्रः विद्याः | ५. शक्तिसंपदः | |

प्र. ३. अपि किरातार्जुनीयम् महाकाव्यम् अस्ति? सविस्तर लिखत। (२०)

अथवा
भीमस्य राजनीतिविचारान् स्पष्टीकुरुत।

प्र. ४. अ) रूपपरिचयं लिखत। (केवल पञ्च) (०५)

- | | | |
|-----------|----------|-------------|
| १. वृण्ते | २. अवेहि | ३. निर्धूय |
| ४. इश्वः | ५. धिया | ६. निरुदीम् |

ब) सनाम समासविग्रहं लिखत। (केवल पञ्च) (०५)

- | | | |
|--------------|------------|------------------|
| १. वैरिकृतः | २. पदातिः | ३. सौष्ठवौदार्ये |
| ४. ऋषिप्रवरः | ५. दुराधयः | ६. आपत्पयोधिः |

प्र. ५. संसदर्भं स्पष्टीकुरुत। (केवलं पञ्च) (३०)

- | | |
|---|--|
| १. कथमेत्य मतिर्विर्ययं करिणी पङ्कमिवावसीदति | २. अर्मषशून्यस्य जनस्य जन्तुना न जातहार्देन च
विद्विषादरः |
| ३. ब्रजन्ति शत्रूनवदूय निःस्पृहाः शमेन सिद्धिं मुनयो न
भूभृत्। | ४. विमला तव विस्तरे गिरां मतिरादर्श
इवाभिदृश्यते। |
| ५. अविभिद्य निशाकृतं तमः प्रभया न अंशुमताप्युदायते। | ६. निराश्रया हन्त हता मनस्विता। |
